जनता शिवरात्रि महाविद्यालय
मेदिनीनगर पलामू

वर्ग : स्नातक (पार्ट 3)
विभाग : इतिहास
प्रो• प्रेमजीत कुमार

Last modified: 16:37

Scanned with CamScanner

किसान विद्रोह तथा किसान आन्दोलन :-

- ब्रिटिश शासन के दौरान स्थानीय उद्योगों के पतन, नई भू-धारण पद्धति व राजस्व व्यवस्था के कारण कृषि भूमि पर बोझ बढ़ गया।
- अत्यधिक सरकारी लगान व जमींदारों के उत्पीड़न के कारण किसान साहूकारों व व्यापारियों के चंगुल में फंस गये।
- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देश में बार-बार अकाल पडे।
- 1855-56 ई. का संथाल विद्रोह भी मूलतः कृषक विद्रोह था।

नील विद्रोह (1860 ई.):-

- बंगाल में नील उगाने वाले कृषकों ने यूरोपीय अधिकारियों के अत्याचारों से तंग आकर सितम्बर, 1859 ई. में विद्रोह कर दिया।
- **नदिया** जिले के गोविन्दपुर गाँव में 1859 में **दिगम्बर विश्वास** और **विष्णु विश्वास** के नेतृत्व में किसानों ने नील की खेती बन्द कर दी।
- इस पर 1860 ई. में एक **'नील आयोग'** की नियुक्ति की गई।
- नील आयोग ने यह सुझाव दिया कि किसानों को नील की खेती के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।
- अन्त में नील उगाने वाले यूरोपीय भूपतियों की हार हुई और वे बिहार तथा उत्तरप्रदेश चले गये।
- **हिन्दू पैटियाट** के संपादक हरिशचन्द्र मुखर्जी ने तथा बुद्धिजीवी वर्ग ने अखबारों में लेखों द्वारा नील आन्दोलन का समर्थन किया।
- **दीनबन्धु मित्र** ने अपने नाटक **नील दर्पण** में नील बगान मालिकों के अत्याचारों का खुला चित्रण किया है।
- **'द बंगाली'** अखबार ने भी नील विद्रोह पर विस्तार से लिखा व इसे सफल बताया।
- नील विद्रोह भारतीय किसानों का पहला सफल विद्रोह था। नील विद्रोह के सफल होने का सबसे प्रमुख कारण किसानों में एकजुटता तथा अनुशासन की भावना थी।
- इस समय नदिया का डिप्टी मजिस्ट्रेट हेमचन्द्र कार था।

दक्षिण का किसान विद्रोह-1875 ई. :-

- यह विद्रोह मुख्यतः मारवाड़ी व गुजराती साहूकारों के विरुद्ध था जो मराठा कृषकों को ऋण देकर उनकी भूमि हड़प लेते थे।
- दक्कन विद्रोह के उदय का आधार रैय्यतवाड़ी व्यवस्था थी।
- विद्रोह सिरूर तालूका के करडाह गाँव से शुरू हुआ क्योंकि यहाँ एक मारवाड़ी साहूकार कल्लूराम ने बाबा साहिब देशमुख के विरुद्ध कोर्ट से बेदखली का आदेश प्राप्त कर लिया था।
- पूना सार्वजनिक सभा ने भी किसानो के समर्थन में तथा 1867 के भू-राजस्व अधिनियम के विरुद्ध आन्दोलन चलाये।
- 1875 ई. में पूना व अहमदनगर सहित अनेक जिलों में विद्रोह

Scanned with CamScanner

फैल गया।

- सरकार ने **'दक्कन उपद्रव आयोग'** नियुक्त किया तथा कृषकों की अवस्था सुधारने के लिए 1879 ई. में 'दक्कन कृषक राहत अधिनियम' पारित किया। इस अधिनियम द्वारा यह नियम बनाया गया कि ऋण अदा न करने पर किसानों की जमीन नहीं हड़पी जा सकती तथा उन्हें जेल नहीं भेजा जा सकता।

फड़के आन्दोलन :-

- 1879 ई. में महाराष्ट्र में **वासुदेव बलवन्त फड़के** ने रामोसी तथा ग्रामीण महाराष्ट्र के किसानों को संगठित कर डाके डालने शुरू किए।
- फडके आन्दोलन में 'क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद' की झलक मिलती है। फड़के ने हिन्दू राज्य की स्थापना का नारा दिया।
- 1880 में फड़के गिरफ्तार हुआ व जेल में 1883 में उसकी मृत्यु हो गई।

पाबना किसान विद्रोह (1873-76 ई.):-

- बंगाल के पाबना जिले के युसुफशाही परगने में 1873 में एक 'किसान संघ' (Agrarian League) की स्थापना हुई।
- पाबना के किसानों ने बढ़े हुए लगान और जमीदारों के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। किसान ब्रिटिश शासन के विरोधी नहीं थे। किसान तो अपने सुधार के लिए इंग्लैंड की रानी के किसान बनना चाहते थे।
- अमृत बाजार पत्रिका ने पाबना आन्दोलन का विरोध किया क्योंकि यह अखबार जमींदारों का समर्थक था।
- पाबना के अलावा यह विद्रोह ढाका, मैमन सिंह, बिदुरा, बाकरगंज, फरीदपुर, बोगरा और राजशाही में भी फैल गया।
- अंग्रेज लेफ्टिनेंट गवर्नर कैंपबेल ने पाबना विद्रोह का समर्थन किया।
- पाबना विद्रोह सांप्रदायिक सौहार्द का अनूठा उदाहरण था। इसमें हिन्दू-मुसलमानों साथ मिलकर लड़े।
- पाबना विद्रोह के प्रमुख नेता **ईशानचन्द्र राय, शम्भुपाल** तथा **खोदी मल्लाह** थे।
- इंडियन एशोसिएशन के सदस्य सुरेन्द्र नाथ बनर्जी आनन्द मोहन बोस, द्वारका नाथ गांगुली आदि ने किसानों की रक्षा हेतु अभियान चलाया।
- पाबना विद्रोह की प्रमुख विशेषता यह थी कि यह कानून के दायरे में हुआ तथा पूर्णतः अहिंसक था।
- सरकार ने पाबना विद्रोह की जाँच करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया। जिसकी सिफारिशों के आधार पर 1885 में **बंगाल काश्तकारी अधिनियम** पारित हुआ। इसके द्वारा किसानों को

Scanned with CamScanner

उनकी जमीनें वापस मिली।

- पंजाब में कृषक असंतोष होने पर **पंजाब भूमि अन्याक्रमण अधिनियम**- 1900 पारित हुआ। इस अधिनियम द्वारा पंजाब में कृषकों की भूमि के गैर कृषकों को हस्तान्तरण पर रोक लगा दी।

मोप्पला विद्रोह (1921 ई.):-

- मोप्पला मालाबार (केरल) के मुस्लिम कृषक थे। ये मूलत: हिन्दुओं की निम्न जाति तिय्या से थे। इनको अब्दुल्ला खर्राजी के शिष्यों ने इस्लाम में धर्मान्तरित किया।
- मोप्पला विद्रोह नंबूदरी तथा नायर जातियों के हिन्दू जमींदारों (जेन्मी) के विरुद्ध था।
- पहला मोप्पला विद्रोह 1836 में हुआ तथा दूसरा मोप्पला विद्रोह 1921 में हुआ।
- बाद में मोप्पला विद्रोह केवल कृषक विद्रोह न रहा व इसने साम्प्रदायिक रूप ले लिया व हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया।
- मोप्पला आन्दोलन खिलाफत आन्दोलन से भी मिल गया।
- मोप्पला विद्रोह शुरू होने का तात्कालिक कारण यह था कि पुलिस द्वारा मोप्पला नेता **अली मुसालियार** को मस्जिद में घुस कर बन्दी बनाने का प्रयत्न किया गया।
- सरकार ने मोप्पलाओं का इतनी क्रूरता से दमन किया कि आजादी तक मोप्पलाओं ने न तो राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया व न केरल के किसान आन्दोलन में भाग लिया।
- **पोडनूर** में 66 मोप्पलाओं को रेल के डिब्बे में बन्द कर दिया गया जिससे दम घुटने से उनकी मृत्यु हो गई। इसे पोडूनर की ब्लैक हॉल दुर्घटना कहते हैं।
- **याकूब हसन , मोइद्दीन कोया** एवं **कुन हमीद हाजी** अन्य मौप्पला नेता थे।
- कुन हमीद हाजी ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि हिन्दुओं पर अत्याचार न हो तथा हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले व सरकार समर्थक मोप्पलाओं की हत्या करने के आदेश भी दिये।

भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस तथा किसान

- अपने आरम्भिक काल में कांग्रेस बुर्जुआ वर्ग तक ही सीमित थी तथा भूमिपतियों के हित की बात करती थी, कृषकों की नहीं।
- गांधीजी अपने आंदोलन के आधार को बड़ा बनाना चाहते थे अत: उन्होंने ग्रामीण जनता व किसानों को भी कांग्रेस में सम्मिलित करने का प्रयास किया।

चम्पारन किसान आन्दोलन -1917:-

- बिहार के चम्पारन जिले में यूरोपीय नील उत्पादकों के अत्याचारों के विरुद्ध गांधीजी के नेतृत्व में किसानों ने अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन शुरू किया। किसानों को **तिनकठिया पद्धति** के तहत 3/20 भाग में नील की खेती करनी पड़ती थी।

Scanned with CamScanner

- **राजकुमार शुक्ला** नामक व्यक्ति ने गांधीजी को चम्पारन आने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी ने बाबू राजेन्द्र प्रसाद की सहायता से कृषकों की वास्तविक स्थिति की जांच की।
- गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। अन्त में एक जांच समिति नियुक्त की गई, जिसमें गांधीजी भी एक सदस्य थे। इसने 'चम्पारन कृषि अधिनियम' पारित किया जिसके तहत **तिनकठिया पद्धति** को समाप्त कर दिया गया तथा किसानों से अवैध रूप से वसूल किये गये धन का 25 प्रतिशत भाग वापिस कर दिया गया।
- चम्पारण में गाँधीजी को राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, आचार्य जे.बी. कृपलानी, बृजकिशोर आदि ने सहयोग दिया।
- चम्पारन सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के बाद **रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधीजी को महात्मा कहा।**

खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.):-

- यह गांधीजी द्वारा भारत में चलाया गया पहला वास्तविक किसान सत्याग्रह था।
- 1917-18 में सूखे के कारण फसल खराब हो जाने पर भी खेड़ा (गुजरात) के कुनबी-पाटीदार किसानों से लगान की वसूली की जा रही थी।
- वल्लभ भाई पटेल व इन्दुलाल याज्ञनिक ने किसानों को लगान न अदा करने का सुझाव दिया।
- 22 मार्च, 1918 को गांधीजी ने खेड़ा आकर आन्दोलन की बागडोर संभाली।
- सरकार ने लाचार होकर हार मान ली और यह गोपनीय दस्तावेज जारी किया कि लगान उसी से वसूल किया जाये जो सक्षम हो।
- विट्ठल भाई पटेल, सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसायटी एवं गुजरात सभा ने गांधीजी की सहायता की।

बारदोली किसान सत्याग्रह (1928 ई.) :-

- बारदोली में स्थानीय नेताओं कल्याणजी व कुंवरजी मेहता तथा

प्रमुख किसान संगठन

संगठन	स्थापना वर्ष
कृषक लीग, ढाका	1870-71 ई.
अवध किसान सभा	1920 ई.
संयुक्त ऐसोसिएशन, गुंटूर	1923 ई.
संयुक्त प्रान्त किसान संघ	1924 ई.
आन्ध्र रैयत ऐसोसिएशन	1928 ई.
संयुक्त प्रान्त किसान सभा	1918 ई.
बिहार प्रान्तीय किसान सभा	1929 ई.
कृषक संघम, मालाबार	1934 ई.
अखिल भारतीय किसान काँग्रेस	1936 ई.
पंजाब किसान समिति	1937 ई.

Scanned with CamScanner